

उं जां श्रुय क हं हं हं हं ॥ उं हां श्रुय गो न न हं हं हं हं ॥ उं जां श्रुय क व लो हं
 हं हं हं ॥ उं हां श्रुय क नो हं हं हं हं ॥ उं जां श्रुय सो द न य हं हं हं हं ॥ उं हं श्रुय
 का व नि नी य हं हं हं हं ॥ उं कि लि श्रुय वि ने हं हं हं हं ॥ उं मि लि श्रुय म दा व लं
 हं हं हं हं ॥ उं हि लि श्रुय क वा कि नी य हं हं हं हं ॥ उं धि लि श्रुय म दा वी न य हं
 हं हं हं ॥ उं का का स्य हं हं हं हं ॥ उं उ लू का स्य हं हं हं हं ॥ उं इ वा ना स्य हं हं

१५

५

अथ श्रुय
 २०५३ ॥ २०२३ ॥ २०२३

388

इवि वं दिवसकान धला मासिया विंद नृपः मे मीर्यं वा न नृपः छिन सिव
न व नृः संरु धार्यं च गमर्थः वजि नै रि म नार्मः विह्वानं ह्वन नृपः छिदि न
रु व तयै यै के मू किय द म ४॥ ॥ ॐ ॥ द्या दि व जी सह द व सै धेः यिं म
यं गृ ह्नु व लिवि सि ह्नुः अ लो ज मा ने स ह्नु रय नि धि शू व य नि वा य
ध ना धिय धः ॐ क्ष नि रू ना धिय नि य द वा उ र्ध्व य यं द्या क वि ना म ह
ध द वा स म स्ताः रु वि शी य ना ग म ध ना ध ना ग म ग नै स म स्ताः य नि र
व लि ३

गृह्णन्तु गृहा न्ना
नै नै क नि व द य लुः स्य का स्य का ये व दि भां स रू नाः स रू स सं द्याः स यून
दा ना स रू र न संधाः पू र्णं व नि धू यं वि न य नै च दा त्या मि व्दं य क म स र
ल र व लु ॥ ॥ ॐ न मो न ल क या यः च द व ज या न यः म हा व ज का
ध यः द ह्नु क म रै ल वा यः अ धि मू ग ल य व ह्नु या स गृ दि न ह स्ता य उ
ज मू रू वृ ह्नु लि ख र व र वा दि र नि रू नि रू व न्ध व न्ध द न स न द द द द
यं य यं य ग ह्नु र वि ह्नु ट य र स र्व वि ह्नु वि ना य का ना म हा ग ध य नि जी

विनांघ्रिका ज्ञायवज्रध्वजज्ञाययं निउंजाहं हृदयादा ॥ ३३ ॥
कानमुख्यादि ॥ ॥ ३३ ॥ वज्रसुख्यादि ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥
संन्यज्ञानाववाप्तनकनायनमहं नमस्तु नमनमा ॥ ३३ ॥ वन्दे हृदयादि स
मग्रसंज्ञानयं अति सयं सक्तु अयसादनममायं ह्यानसंज्ञानमनं वज्र
जकार्यजकिधीयवक्रिनीयः यं यं ह्यानमिहानाय ज्ञानाय ॥

जगतां नमः ॥ यावता वज्रजकिनी ॥ छिनसंकल्यवन्द ॥ लाकाकि
रिपुविनिना गाल्यानिशानमसदा ॥ ॥ ३३ ॥ स्वरावसज्ञा सर्वध
माना स्वरावसज्ञा हृदयनां ह्यानवज्रस्वरावात्मको हं ॥ ॥ ॥
मटियां काल ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥
गुवजिगः नूकाननयना ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥
धननहनीः ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३३ ॥

[illegible]

ASPA ARCHIVE

388

न ४ र ग घ ङो क ख व श ष ढ ढां य ध म ण्डां लां व ड षं भ षनं द्वि ति य
 लां ख मे न ड नी या ण ४ रु नि या लां उ म नू ख लां ङ ॥ व ड मू षः श ष्क स्या म न
 ऊ पी न ४ ॥ का का स्या क ष्क ४ ३ ल का ला ङ्ग मा ४ ध ना स्या न का ४ डु क ना
 स्या पी ना ४ य म डं नि क ष्क पी ना ४ य म डं न पि न न का ४ य म डं हि न का ङ्ग
 मा ४ य म म ध नी य ङ्ग म श ष्क ४ ॥ व ड ॥ उ स्त्र ष नी स ष्क णी हं हं रू ४ ३ गू ड र

हं हं हं ४॥ उं गं कायस १ हं हं हं ४॥ उं ज्ञा नय हा ४ रग वन विद्या नाऊ हं हं ४
॥ य नो ज्ञा कां हा दसा न कां न हा सूर्य म धु लः न य म धा हं का न धा वि ध्व व ऊ हं
का ना धि स्ति न ४॥ न द सि नीः उ व र ल य मा नः व ऊ फ नि का नू पेः न च गे न व
ज म य ह म वि रा व ४॥ उं म द नी व ऊ रा वः व ऊ व ध हं ४॥ उं व ऊ या का न हं हं ४
उं व ऊ यं उ ल हं हं ४॥ उं व ऊ वि ना न हं हं ४॥ उं व ऊ स न जाल गं स गं ४॥ उं व

अज्ञानानां नो कर्तुं ॥ उक्तं नञ्जुष्टदिगया कानवहि कृवनि वेसिमान ॥ उक्तं
त्यादि विद्य हृदय की नय ॥ ॥ उक्तं चानय २ सर्वद्रशान हं रू ॥ उक्तं
नय २ सर्वयायान हं रू ॥ उक्तं कीलय वज्रयन आह्वययः सर्वविद्यविनाय
कानां कायवाक्यिर्हः वजा कीलय २ हं रू ॥ उक्तं मूजन वज्र कीलय मा
काटय हं रू ॥ उक्तं निनि विद्य विताया ॥ ॥ गुरुस्व हृदय विजल

स्मिन्ति उगदर्थ कर्त्ताः अकनिष्ठरुवनगत्वाः गुरुस्व जूनादिसमिन्ति जीवक
सम्बन्धेन गवन्तु गवन्ति समापनं समादलयं स्नानयजमाकाशदध्यहृत्या ॥ ३ ॥
तिमुखं मरि संपूज्यः समन्तसमयमधुलं विध्यन्तु समनसि कृत्वाः मनमयी
तिष्ठयुजादवीतिष्ठयुक्त ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ याद्यादि ॥ धीवज्रहं नूक हं रू ॥
रू ॥ अकिनी जालसंभ्रं नखात् ॥ उक्तं १ हं रू हं रू ॥ उक्तं सर्ववृद्धता कीनी

यउं वउ वउ नीय हें हें रु॥ उं वउ वे नीय नीय हें हें रु॥ स्वाहा ॥ मध्य ॥ उं
ताकि नीय हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं नाम हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं खलु ना हें हें रु॥ स्वा
हा ॥ उं नूयिनीय हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं वाधिविर्ल मृग ता एतु हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं क
नकनमये हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं कनू श्वेष्ठा श्री नीय हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं वन्ध
श्वेष्ठा वनिय हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं नासय शमा हा नास्य हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं क्षा म

यशवी नम नीय हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं जी श्वेष्ठा नीय हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं ऊं श लं
का म्य नीय हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं रुं श्वेष्ठा नीय हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं रुं श्वेष्ठा नीय
नीय हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं व ह श म हा रे न नीय हें हें रु॥ ॥ उं यं व श वा य वे ज हें
हें रु॥ ॥ उं रुं श्वेष्ठा नीय हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं रुं श्वेष्ठा नीय हें हें रु॥ ॥ उं रुं श्वेष्ठा
श्वेष्ठा नीय हें हें रु॥ स्वाहा ॥ उं रुं श्वेष्ठा नीय हें हें रु॥ ॥ उं रुं श्वेष्ठा नीय हें हें रु॥ ॥